पाल चित्रकला

- 28th lecture by.
Mamta Rani
History depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA
04-05-2020.

Scanned with CamScanner

पाल चित्रकला

- पाण्डुलिपि चित्रकला
- भित्ति या दीवार चित्रकला

पाण्डुलिपि चित्रकला के तहत पाल चित्रकला का भी विशिष्ट स्थान है जिसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं।

पाण्डुलिपि चित्रकला की विशेषताएँ :- ऐसे चित्र किसी विषयवस्तु को विस्तार देने तथा सजावट के उद्देश्य से बनाये गये हो।

• ऐसे चित्र मुख्यतः ताड़ पत्रों पर मिलते हैं। अधिकांश पाण्डुलिपि चित्र नालंदा महाविहार से संबंधित माने जाते हैं जिन्हें आगे चलकर

Scanned with CamScanner

नेपाल, तिब्बत, वर्मा, श्रीलंका से जाए बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बाहर ले जाया गया।
• इन चित्रों की लघु चित्रों की श्रेणी मे रखा जाता है
• इन चित्रों मे मुख्यतः गहरे रंगों, लाल, काला आदि का प्रयोग मिलता है। पाल पाण्डुलिपि चित्रण के प्रमुख उदाहरण —

अष्टसहस्त्रिका, प्रज्ञा, पारमिता :- यह वर्तमान मे लंदन स्थित पुस्तकालय मे संग्रहित है। इस चित्र पर बौद्ध तांत्रिक कला का प्रभाव माना जाता है। साथ ही इस पर नेपाल, वर्मा मे प्रचलित बौद्ध मान्यताओं को भी देखा जा सकता है।

• पंचरक्षा :- यह पाण्डुलिपि चित्र भी बौद्ध धर्म के शैव दर्शन से संबंधित तथा वर्तमान मे लंदन पुस्तकालय मे संरक्षित है।

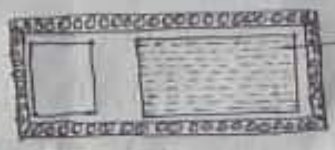

— लेखन

भित्ति चित्रण | दीवार चित्रण की विशेषताएँ :- पाल चित्रकला का एक रूप भित्ति चित्र या दीवार चित्र के संदर्भ मे भी दिखाई पड़ता है। इन चित्रों को पहले से चली आ रही अजंता, बाघ की गुफाओं मे दीवारों पर चित्रित परम्पराओं से जोड़ा जा सकता है।

इन चित्रों के विशिष्ट उदाहरण नालंदा स्थित सरायटीला से प्राप्त हुआ है। इन चित्रों मे मानव, पशु, फूल-पत्ती आदि का ज्यामितिय पद्धति से मे भी व्यापक स्तर पर दिखाई पड़ता है।

इन चित्रों मे गहरे रंगों का प्रयोग विशेष रूप से हुआ है।

समीक्षा एवं निष्कर्ष :- पालकला के विभिन्न रूपों से संबंधित उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इस कला की कई विशेषताएँ स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला के संदर्भ मे उल्लेखनीय है।

Scanned with CamScanner

जैसे – इस काल मे महाविहारो के निर्माण की परम्परा पहले से ज्यादा व्यवस्थित एंव व्यापक हुई। पालकालीन कांसे की मूर्तियों अपने कलात्मक संदर्भ मे समकालीन चोलकालीन नटराज के कांसे की मूर्ति के समकक्ष/सदृश है, चित्रकला के संदर्भ मे पाण्डुलिपि चित्रण का विकास कई रूपो मे विशिष्ट है।

पर कला समीक्षको ने कुछ बिन्दुओं पर पाल कला की आलोचना की है। इनमे से प्रमुख निम्नलिखित है -

① पुनरावृत्ति दोष : कई समीक्षकों के अनुसार पाल कला, विभिन्न रूप स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला आदि पूर्व से प्रचलित तत्वो का ही दोहराव है परिणामतः इसमें नवीनता का अभाव है। उदाहरण के लिए पालकालीन मूर्तियाँ मौर्योत्तर काल से चली आ रही मथुरा एंव गंधार शैली तथा गुप्तकालीन मूर्तिकला शैली के आधार पर निर्मित है. इसी प्रकार पाल चित्रकला के अन्तर्गत भित्ति/दीवार चित्रण अंजता एलोरा एंव बाघ की गुफा चित्रों की ही पुनरावृत्ति है।

② अत्याधिक आलंकरण :- कला समीक्षकों ने विशेषकर पाल मूर्ति कला पर इस दोष की बात की है। इसके प्रभाव तथा सहज सौंदर्य का बोध का अभाव दिखता है। फलस्वरूप प्राकृतिक जिवंतता एंव स्वभाविकता भी खंडित होती है या कमजोर पडती है।

③ कुछ कला समीक्षको ने उन पाल मूर्तियों की आलोचना की है जिनमें सिर्फ मूर्तियों के अग्रभाग का ही अंकन हुआ है।

उपरोक्त आलोचनाओ के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि पालकालीन कला के विभिन्न रूप पूर्ववर्ती कला परम्पराओं से प्रेरित है तथा एक सीमा तक उसमे नवीनता की कमी है परन्तु व्यापक रूप से/मे देखने पर इस कला मे तात्कालिन जनजीवन का काफी हद तक चित्रण है, जो किसी भी काल के कला से मूल अपेक्षा रखी जाती है।

कुल मिलाकर कहा

Scanned with CamScanner

जा सकता है कि पाल शासकों ने पूर्व मध्यकालीन भारत में विकसित हो रहे त्रिपक्षीय संघर्ष की राजनीति में सशक्त उपस्थिति तो दर्ज की ही साथ ही कला के विविध रूपों के विकास की दृष्टि से बिहार की समृद्धशाली कला परम्परा में नये आयाम भी जोड़े ।

Scanned with CamScanner